RNI NO. 45823/1986 REGISTRATION NO. DL(DS)-02/MP/2025-26-27, DL(ND)-11/6042/2024-25-26, LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2024-26, FARIDABAD/46/2023-25 www.indiatodayhindi.com

गणतंत्र दिवस विशेषांक

5 फरवरी, 2025 60 रुपए

इंडिया टुडे

जिनसे जीवन बना आसान

पिछले 25 साल में हुए ऐसे 25 नवाचारों की कहानियां जिनसे आम आदमी की रोजमर्रा की दुश्वारियां कम हुईं

CamScanner

पानी का सपना हुआ अपना

देश की लाखों महिलाओं को अब पानी लाने के लिए मीलों दूर नहीं जाना पड़ता क्योंकि अब उन्हें अपने घर में ही नल से जल मिल रहा

अमरनाथ के. मेनन

थीं कितनी दुश्वारियां

सुबह जल्दी उठना. घर के सभी बर्तनों को लेकर सबसे पास वाले कुएं या हैंडपंप पर जाना और लंबी कतार में लगना. बर्तनों के अपने कोटे को भरने के लिए बूंद-बूंद पानी का अंतहीन इंतजार. और सिर पर एक के बाद एक बर्तनों को संतुलित ढंग से रखकर घर वापस लौटने के लिए लंबा सफर. हमारे गांवों में भारतीय महिलाओं की यही नियति थी. रोजाना पानी इकट्ठा करने में बिताए जाने वाले कीमती घंटों की बर्बादी. गर्मी का मौसम अपने साथ डर लाता है और तब पानी की किल्लत बढ़ने का अंदेशा रहता है. कई लोगों ने जीवन के अमृत को पाने के लिए जमीन में गहरी खुदाई की लेकिन ज्यादा से ज्यादा बोरवेल की वजह से भूजल खतरनाक ढंग से नीचे चला गया और जमीन सूख गई. नल का कनेक्शन एक विलासिता थी जिसे भारत के 82 फीसद ग्रामीण परिवारों ने कभी नहीं देखा था.

यूं आसान हुआ जीवन

अब यह बीती बात हो गई है. देश के 19 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण परिवारों में से लगभग 80 फीसद यानी 15.4 करोड़ के घर में नल है. और इस बदलाव को लाने में मदद करने वाला जल जीवन मिशन (जेजेएम) है, जिसे 2019 में लॉन्च किया गया था. जेजेएम 3.6 लाख करोड़ रुपए के परिव्यय, और पारदर्शिता और वास्तविक समय की निगरानी के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए 2024 तक सभी गांवों के घरों में नल कनेक्शन लगाने की कोशिश कर रहा है. इसका ध्यान जल आपूर्ति के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण कर जल प्रवाह बनाए रखने के लिए जल संसाधनों को बनाए रखना है.

जेजेएम की विविध चुनौतियों ने पांच साल में पूर्ण कवरेज के लिए इसकी महत्वाकांक्षा को भले नाकाम कर दिया हो लेकिन 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने असंभव लगने वाले लक्ष्य को हासिल कर लिया है. छह

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि **हर घर नल का पानी पहुंच जाने से रोज के 5.5 करोड़ घंटे** बच सकते हैं, जो अन्यथा पानी जमा करने में खर्च हो जाते हैं.

हर घर नल से जल

शुरुआत 2019 में

उपलब्धि 2019 में 18 फीसद ग्रामीण घरों में नल से जल [illegible] था जो अब बढ़कर 80 [illegible] गया है

इसने कैसे बदली मेरी जिंदगी

"अब पढ़ने का समय मिल पाता है"

आकांक्षा अहीरवार, 14 वर्ष

छात्रा, बाबई गांव, निवाड़ी, मध्य प्रदेश

अपनी उम्र से कहीं ज्यादा समझदार, कक्षा नौ की छात्रा आकांक्षा अहीरवार को अच्छी तरह याद है कि कैसे उनके गांव की नई-नवेली बहुओं को भी तुरंत दूर-दराज के कुओं और हैंडपंपों से पानी लाने के लिए भेज दिया जाता था. उत्तर प्रदेश से सटा राज्य का सबसे छोटा जिला निवाड़ी सूखे बुंदेलखंड का हिस्सा है, जहां पानी की कमी रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा थी. आकांक्षा कहती हैं, "सिर्फ हमारे गांव में ही नहीं, पूरे जिले में पानी की किल्लत थी. हमें दूर के हैंडपंप से पानी लाना पड़ता था. इसमें वक्त बर्बाद होता और कई बार मैं स्कूल के लिए देर से पहुंचती."

जल जीवन मिशन ने यह सब बदल दिया. आकांक्षा कहती हैं, "अब हमारे यहां नलों में पानी आ रहा है." महिलाएं दूसरे कामों के लिए समय निकाल ले रही हैं. आकांक्षा के पास अब पढ़ाई के लिए ज्यादा समय है. वे कहती हैं, "पूरा गांव हरा-भरा हो गया है." वे पिछली तकलीफ भूल गई हैं क्योंकि जिले के सभी 55,645 घरों में हर रोज नलों से पानी आ रहा है.

—हिमांशु शेखर

CamScanner